लविवि की अनूठी पहल, स्टूडेंट्स से दोस्ती की ओर बढ़े कदम

हॉस्टल में रहने वाले स्टूडेंट्स खुल के कह पाएं अपनी बात, इसलिए शुरू किया संवाद, सामाजिक संस्था की ओर से किया जा रहा प्रेरित

रोली खन्ना

लखनऊ। घर से दूर, अनजाने चेहरों के बीच, एक ही कमरे में कई दोस्तों के साथ रहना, उठना-बैठना, कई बार मन न होते हुए भी तालमेल बैठाने की कोशिश करना और साथ-साथ पढ़ाई और कॅरिअर का दबाव। कुछ ऐसे हालात और मनःस्थिति से गुजरते हैं, विश्वविद्यालय में पढ़ने वाले हॉस्टल के छात्र-छात्राएं। हॉस्टल में रहने वाले छात्र-छात्राओं के सुख-दुख को साझा करने की एक अनूठी पहल करते हुए लखनऊ विश्वविद्यालय ने 'एक कदम दोस्ती की ओर' बढ़ाया है। इसके लिए सामाजिक संस्था सुरक्षा व नवकल्याणी के सहयोग से छात्र-छात्राओं से ज्यादा से ज्यादा संवाद के लिए प्रेरित किया जा रहा है।

तनाव प्रबंधन : राह चलते शोहदों से होने वाली परेशानी, हॉस्टल का तनाव समेत हर छोटी बड़ी बातों पर होने लगी बात

शुरुआत हो चुकी कैलाश छात्रावास से

एक कदम दोस्ती की ओर की जरूरत क्यों पड़ी इस संबंध में लविवि की चीफ प्रोवोस्ट प्रो. मनुका खन्ना बताती हैं अपनों से दूरी, कॅरिअर को लेकर दबाव की वजह से हॉस्टल में रहने वाले स्टूडेंट्स अक्सर अवसाद की स्थिति में चले जाते हैं। ऐसे में कुलपति प्रो. आलोक कुमार राय ने यह पहल की। इसके तहत हम छात्र-छात्राओं से बात कर उनकी समस्याओं को जानने की कोशिश के साथ ही समाधान भी निकालेंगे। इसकी शुरुआत कैलाश छात्रावास की छात्राओं से कर दी गई है। एक-एक कर सभी हॉस्टल के स्टूडेंट्स से संवाद होगा, फिर सभी को साथ मंच पर लाया जाएगा। महिलाओं के लिए काम करने वाली संस्था सुरक्षा व नवकल्याणी स्टूडेंट्स को तनाव मुक्त करने में हमारी मदद कर रही है।

...और परिणाम भी आने लगे हैं

बीते दिनों कैलाश छात्रावास की छात्राओं के साथ 'स्टूडेंट्स से दोस्ती' संवाद का आयोजन किया गया। इसमें छात्राओं की झिझक टूटती दिखी।

शोहदों की अश्लील हरकतें तनाव और डर दोनों बढ़ाती हैं

केस-1 हॉस्टल में रहने वाली एक छात्रा ने कहा कि विश्वविद्यालय के आसपास के क्षेत्र में शोहदों का जबरदस्त आतंक है। हम लोग उनकी अश्लील हरकतों की वजह से अक्सर तनाव में रहते हैं। हमें एक डर-सा लगा रहता है, पर कह नहीं पाते किसी से।

शहरी माहौल में खुद को फिट नहीं कर पाते हैं हम

केस-2 एक अन्य छात्रा ने स्वीकार किया कि वह ग्रामीण माहौल से है। उसे हॉस्टल व विश्वविद्यालय में रहने वाली शहरी छात्राओं के साथ तालमेल बिठाने में दिक्कत आती है। उसने बताया-कई बार हमारे मन में हीन भावना आती है। हम इससे निकल नहीं पाते हैं।

महीने में कम से एक बार संवाद जरूरी

महीने में कम से कम एक बार स्टूडेंट्स के साथ संवाद किया जाएगा। ओल्ड व न्यू कैंपस में मिलाकर 17 हॉस्टल हैं। इनमें से 10 छात्रों के और सात छात्राओं के हैं। कुलपति चाहते हैं कि छात्र-छात्राओं को हम मानसिक रूप से मजबूत बनाएं और हर हाल में सकारात्मक सोच विकसित कर सकें।

-प्रो. मनुका खन्ना, चीफ प्रोवोस्ट

हमारा फोकस समस्याओं के समाधान पर

कई बार अति महत्वाकांक्षा स्टूडेंट्स को रास्ते से भटका भी देती है और गहरा अवसाद उन्हें घेर लेता है। यह दिक्कत ज्यादा इसलिए बढ़ जाती है, क्योंकि कोई अपना उनके पास नहीं होता। इससे वे अपने दिल की बात किसी से कह नहीं पाते। हमारा फोकस समस्याओं को जानने और उसका समाधान निकालने पर है।

-शालिनी माथुर, निदेशक, सुरक्षा व नवकल्याणी

बिना नैड आईडी के नहीं भर पाएंगे परीक्षा फॉर्म

लखनऊ विश्वविद्यालय बदलेगा परीक्षा फॉर्म का प्रारूप

माई सिटी रिपोर्टर

लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय अपने ऑनलाइन परीक्षा फॉर्म में बड़ा बदलाव करने जा रहा है। जिन विद्यार्थियों के पास अंकपत्र नेशनल एकेडमिक डिपॉजटरी (नैड) की आईडी नहीं होगी, वे परीक्षा फॉर्म नहीं भर पाएंगे। लविवि इसी सप्ताह से परीक्षा फॉर्म भरने की शुरुआत करने जा रहा है। इस परीक्षा फॉर्म में नैड आईडी के साथ ही हाईस्कूल के प्रमाण पत्रों का ब्योरा देना भी अनिवार्य होगा। नैड आईडी न बना पाने वाले विद्यार्थियों को परीक्षा फॉर्म के साथ ही इसे बनाने का लिंक भी मिलेगा।

प्रदेश सरकार ने भी जनहित गारंटी अधिनियम के तहत नैड से जोड़ने का निर्देश दे रखा है। इसके तहत सभी अंकपत्र ई-डिस्ट्रिक्ट पोर्टल पर अपलोड होने हैं। पोर्टल पर अंकपत्र अपलोड होने के बाद विद्यार्थियों के अंकपत्र नैड की आईडी के माध्यम से कहीं से भी सत्यापित हो जाएंगे। इस काम के लिए केंद्र सरकार ने एनएसडीएल और सीडीएसल को नामित किया है। इसको ध्यान में रखते हुए लविवि ने अपने परीक्षा फॉर्म में ही नैड की आईडी की अनिवार्यता शामिल कर दी है। इसलिए परीक्षा फॉर्म भरने के लिए सभी विद्यार्थियों के पास नैड की आईडी बनाना जरूरी है।

परीक्षा फॉर्म में नैड आईडी और हाईस्कूल के प्रमाण पत्रों का ब्योरा देना होगा अनिवार्य

कंप्यूटर सेंटर से दी गई थी आईडी बनाने की सुविधा

विवि ने सभी विद्यार्थियों को 31 जनवरी तक डिजी लॉकर के लिए आईडी बनाकर लॉग इन करने का निर्देश दिया था। विवि के कंप्यूटर सेंटर पर दोपहर दो बजे से शाम चार बजे के बीच जाकर मदद लेने का विकल्प भी दिया गया था। इस पर जाकर काफी विद्यार्थियों ने अपनी आईडी बनाई है।

मोबाइल पर भी बना सकते हैं आईडी

नैड या फिर डिजी लॉकर की आईडी बनाने का काम विद्यार्थी मोबाइल पर भी कर सकते हैं। इसके लिए उन्हें डिजी लॉकर एप डाउनलोड करना होगा। इसके बाद वे इस पर अकाउंट बना सकते हैं। यूजर आईडी और पासवर्ड बनाने के बाद विद्यार्थी अपने अंकपत्र परीक्षा लेने वाली संस्था के माध्यम से या फिर स्वयं स्कैन करके अपलोड कर सकते हैं।

"सरकार की ओर से विद्यार्थियों को डिजी लॉकर की सुविधा देने का निर्देश दिया गया है। इसलिए विद्यार्थियों को नैड की आईडी बनाने को कहा गया है। इस बार विवि के ऑनलाइन परीक्षा फॉर्म में विद्यार्थियों को नैड की आईडी भी डालनी होंगी। अगर अभी तक उन्होंने आईडी नहीं बनाई है तो फिर जल्द बना लें। -**डॉ. अंजनी कुमार मिश्रा,** परीक्षा नियंत्रक, लविवि

पॉकेट मनी बचाकर छात्र गरीबों को बांटते हैं कंबल

Page

माई सिटी रिपोर्टर

लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय के विधि संकाय के 12 छात्रों के समूह ने सामाजिक सरोकारों की नजीर पेश की है। इन विद्यार्थियों ने सर्दियों में गरीब और निराश्रितों को कंबल बांटने का जिम्मा उठाया है। कंबल खरीदने के लिए इन्होंने अपनी पॉकिट मनी और न्यू ईयर की पार्टी के लिए मिले रुपयों का इस्तेमाल किया। इन दोस्तों ने अब तक दो सौ से ज्यादा कंबल बांटे हैं। यह ग्रुप रात में निकलकर गरीबों को कंबल बांटता है। इन युवाओं का कहना है कि यह अभियान हम पूरी सर्दी चलाएंगे। अगर जरूरत पड़ी तो इसके लिए अन्य लोगों से भी सहयोग मांगेंगे।

ज्यादातर युवा जहां नववर्ष का स्वागत मौज-मस्ती से करते हैं। वहीं इन युवाओं ने कुछ अलग ढंग से नया साल मनाने की ठानी। ग्रुप के सदस्य अनन्य गोविंद शर्मा ने बताया कि हमने ये संकल्प लिया है कि ठंड में सड़क किनारे सोने वाले गरीब असहाय जरूरतमंद लोगों को कंबल वितरित करेंगे। कंबल बांटने का ख्याल आपस में हुई बातचीत के बाद आया। इसके बाद हम रोजाना मध्यरात्रि में निकल कर शहर के मुख्य चौराहों, सड़कों, गली-मोहल्लों में स्कूटी से घूम-घूम कर जरूरतमंद असहाय लोगों को कंबल एवं गरम कपड़े वितरित करते हैं। इस ग्रुप में मुख्य रूप से अनन्य गोविन्द शर्मा, हरिगोविंद, अभय राज शरण, निखिल सैनी, अमन, पुलकित, आयुष, जयेन्द्र, नितिश, अज्ञेय, सुधांशु, रितेश, शशांक शामिल हैं।

लविवि के विधि संकाय के 12 छात्रों के समूह की पहल

लविवि के छात्र गरीबों को कंबल बांटते हुए।

लोगों ने भी किया सहयोग

ग्रुप के सदस्यों ने बताया कि कंबल बांटने के लिए जब धन की कमी हुई तो सोशल मीडिया पर अपील की गई। हमारे काम को देखकर कई लोगों ने हमारी सहायता की। उनके सहयोग से हम ज्यादा कंबल खरीद सके। अनन्य गोविंद शर्मा के अनुसार अगर हम अपने आसपास के लोगों को सर्दियों में कपड़े और कंबल दे सकें तो सर्दी से किसी की मौत नहीं होगी।